34

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु

(14:1-12)

यीशु की सेवकाई के ठुकराए जाने का विषय मत्ती 11 और 12 में देखा जा चुका है। अध्याय 13 वाले दृष्टांतों के बाद, धर्मशास्त्र अध्याय 14 से 17 में यीशु के लिए अतिरिक्त टिप्पणियां देने पर फोकस करता है। जो लोग यीशु को सुन और देख रहे थे, वे धीरे-धीरे परन्तु साफ़ तौर पर अलग- अलग धड़ों में बंट रहे थे। एक वो थे जो उसे मसीहा के रूप में मान रहे थे, यानी जो उसे स्वीकार कर रहे थे और दूसरे वे थे जो मान नहीं रहे थे यानी जो उसे नकार रहे थे। यह फूट उस बांटने वाली तलवार को दर्शाता है जिसका यीशु ने अभी-अभी बताए गए दृष्टांतों में संकेत दिया था।[1]

इस अध्याय में आगे चलकर यीशु को तीन अलग-अलग दृष्टिकोणों से दिखाया गया है। चौथाई के हाकिम हेरोदेस को लगा कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा यूहन्ना ही है (14:1-12)। भीड़ ने यीशु को एक सांसारिक मसीहा के रूप में देखा, जो उनकी भूख को मिटा सकता था और उनकी बीमारियों को चंगा कर सकता था (14:13-21, 34-36)। चेलों ने पानी पर चलने के समय यीशु को गलती से भूत समझ लिया, परन्तु बाद में उन्होंने उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचान लिया (14:22-33)।

एक अर्थ में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु ने यीशु की आने वाली मृत्यु का आभास करवा दिया। यूहन्ना और यीशु को एक ही तरह से सताया गया था, दोनों ने एक-दूसरे की बड़ी तारीफ़ की और दोनों ही अपने लोगों के पास आए, जिन्होंने उन्हें ठुकरा दिया (14:1-12)।[2]

यीशु के विषय में हेरोदेस का गलत विचार (14:1, 2)

[1]उस समय चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी, [2]और अपने सेवकों से कहा, ''यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है! वह मरे हुओं में से जी उठा है, इसी लिए उससे सामर्थ के काम प्रकट होते हैं।''

आयत 1. उस समय विवरणों को इकट्ठे जोड़ने के लिए मत्ती की पुस्तक में इस्तेमाल किया गया एक सामान्य वाक्यांश है (11:25; 12:1); आवश्यक नहीं कि इसका संकेत कड़े शब्दों में कालक्रम का हो। तौभी यह विवरण विषय के अर्थ में पिछले विवरण के साथ जुड़ा है। नासरत में लोगों ने पूछा, ''इसको यह ज्ञान और सामर्थ के काम कहां से मिले?'' (13:54)। यह प्रश्न आयतें 1 और 2 में मिलता है, चाहे हेरोदेस का जवाब सही नहीं था।

यहां पर बताया गया हाकिम **चौथाई देश का राजा हेरोदेस** अन्तिपास था। हेरोदेस महान की मृत्यु के बाद, उस की वसीयत के कागज़ों के द्वारा, उस का राज्य उसके तीन पुत्रों में बांट

दिया गया था।

अरखिलाउस को यहूदिया, सामरिया और इदूमिया के इलाके दिए गए थे। वह वही राजा था जो यूसुफ, मरियम और यीशु के मिस्र से लौटने के समय यहूदिया पर राज कर रहा था। उसके जुल्म से सहमे हुए होने और स्वप्न में चेतावनी पाने के कारण, यूसुफ अपने परिवार को लेकर गलील के नासरत में लौट गया था (2:22, 23)।

हेरोदेस फिलिप्पुस द्वितीय को त्रुखुनीतिस, इतुरिया, गैरिन्तुस, बैतनिय्याह और अरंतिस नामक उत्तरी इलाके दिए गए थे। हेरोदेस अन्तिपास को इन दोनों के बीच के इलाके दिए गए थे, जिनमें गलील और पिरिया भी थे। अरखिलाउस को गवर्नर (''लोगों का हाकिम'') आधिकारिक नाम दिया गया था, जबकि अन्तिपास और फिलिप्पुस द्वितीय को ''टेट्राक'' अर्थात ''चौथाई के हाकिम'' (लूका 3:1) बनाया गया।[3] बाद का यह शब्द राजा या गवर्नर से कम प्रभाव के राजकुमार या शासक के लिए इस्तेमाल होने लगा।

हेरोदेस अन्तिपास हेरोदेस महान और उस की तीसरी पत्नी मलथेस जो सामरी थी, का पुत्र था। इसका अर्थ यह है कि उस में अपने पिता से भी कम यहूदी लहू था। हेरोदेस अन्तिपास ने 4 ई.पू. से 39 ई. तक पिरिया और गलील पर शासन किया। यह समय नासरत में यीशु के जीवन और उस की सेवकाई के वर्षों का था।

नये नियम में किसी भी अन्य हेरोदेस से बढ़कर, चाहे वह हेरोदेस महान ही क्यों न हो, हेरोदेस अन्तिपास का उल्लेख सबसे अधिक है। इस वचन पाठ में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु में उस की प्रमुख भूमिका थी (14:1-12)। वह यीशु की दूसरी रोमी पेशी के दौरान जिसके पास पिलातुस ने यीशु को भेजा गया, उस का भी हाकिम था। लूका ने इस मुलाकात का विस्तृत विवरण दिया है (लूका 23:6-12)। हेरोदेस अन्तिपास यीशु से साक्षात्कार करने पर खुश हुआ और उस ने यह मान लिया कि पिलातुस ने उसे व्यक्तिगत पक्ष लेते हुए उसके पास भेजा। पिलातुस के इस काम से दोनों के बीच का पुराना झगड़ा खत्म हो गया। यीशु के बारे में सुनने के बाद हेरोदेस की बड़ी इच्छा थी कि वह उसे आश्चर्यकर्म करते हुए देखे। जब यीशु ने उसके प्रश्नों का उत्तर देने से मना कर दिया तो हेरोदेस ने उसे सिपाहियों के हाथ सौंप दिया। उन्होंने अपमानजनक ढंग से, निर्दयतापूर्वक उस का ठट्ठा उड़ाते हुए उसके साथ व्यवहार किया और फिर हेरोदेस ने उसे पिलातुस के पास वापस भेज दिया।

मत्ती कहता है कि हेरोदेस **ने यीशु की चर्चा सुनी**। ''चर्चा'' (*akoē*) का अनुवाद ''प्रसिद्धि'' (KJV) या ''खबरें'' (NIV) भी हो सकता है। मत्ती में ये पहले शब्द ''सारे सीरिया देश में उस का यश फैल गया'' (4:24) के रूप में मिलते हैं, जिसका अर्थ यह है कि फलस्तीन के पूरे इलाके में यह खबर फैल गई थी (4:24, 25 पर टिप्पणियां देखें)। मरकुस और लूका में यीशु के बारे में हेरोदेस का चर्चा को लेना सीमित आज्ञा के संदर्भ में मिलता है जब प्रेरित उसके अधिकार से बीमारों को चंगा कर रहे थे और दुष्टात्माओं को निकाल रहे थे (मरकुस 6:12-14; लूका 9:6, 7)। इन खबरों के स्रोत के बारे में वचन खामोश है। हेरोदेस का राजधानी नगर, तिबरियास कफ़रनहूम से गलील की झील के तट पर थोड़ी ही दूर था। यीशु की सेवकाई की बातें हेरोदेस के पास उसके भण्डारी खुज़ा के द्वारा पहुंची हो सकती हैं, जिसकी पत्नी उन स्त्रियों में शामिल थी, जो यीशु की सहायता करतीं और उसके साथ घूमती थीं (लूका

8:1-3)।[4] हेरोदेस और मसीही लहर दोनों के साथ अच्छे सम्बन्ध रखने वाला एक और व्यक्ति था मनाहेम, चाहे वह बाद में ही परिवर्तित हुआ हो (प्रेरितों 13:1)।

आयत 2. यीशु चाहे अपने आपको आमतौर पर ''मनुष्य का पुत्र'' कहता था पर उसके आसपास के लोग कई नामों से पहचान रहे थ और उन्हीं में से कुछ का नाम दे रहे थे। जब यीशु ने चेलों से पूछा, ''लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?'' (16:13), तो उनका पहला उत्तर यही था कि ''यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला'' (16:14)। हेरोदेस ने प्रसिद्ध हुई अवधारणा को मान लिया था कि यीशु ही मरे हुओं में से जी उठने वाला यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है (मरकुस 6:14-16; लूका 9:7-9)। उस ने **अपने सेवकों** को कहा कि **''यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है! वह मरे हुओं में से जी उठा है, इसी लिए उससे सामर्थ के काम प्रकट होते हैं।''**

अनपढ़ और अंधविश्वासी लोग कई कारणों से ऐसे निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं: (1) यीशु और यूहन्ना उम्र में एक-दूसरे के बराबर थे। यीशु और यूहन्ना की उम्र में केवल छह महीने का अन्तर था (लूका 1:26, 56, 57)। (2) उनकी सेवकाइयां एक-दूसरे से बहुत मिलती-जुलती थीं (3:13; यूहन्ना 3:30)। (3) यूहन्ना और यीशु एक ही संदेश सुनाते थे: ''मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (3:2; 4:17)। (4) यूहन्ना ने अपने जीवन काल में कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया था (यूहन्ना 10:41),[5] परन्तु यीशु बड़े-बड़े चिह्न दिखा रहा था। हेरोदेस का प्रस्ताव इस बात का संकेत है कि उस समय यह प्रसिद्ध विचार पाया जाता था कि बिछड़ी हुई आत्माओं को अलौकिक शक्तियां मिल जाती हैं। इसी विचार से मेल खाते हुए हेरोदेस ने तर्क दिया कि यूहन्ना बड़ी सामर्थ के साथ जी उठा था, जिसके द्वारा वह उन कामों को कर रहा था, जिनकी चर्चा हो रही है।[6]

बेशक हेरोदेस दोषी विवेक से ही यीशु के बारे में इस निष्कर्ष पर पहुंचा होगा, क्योंकि उस ने अन्यायपूर्ण ढंग से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को मरवाया था। यह हेरोदेस के स्वभाव के साथ मेल खाता होगा। जैक पी. लुईस ने ध्यान दिलाया है कि जोसेफस के अनुसार, ''हेरोदेस महान स्वयं अपने मरे हुए पुत्रों सिकन्दर और अरिस्तोबलुस के भूतों से परेशान था।''[17]

यूहन्ना की गिरफ़्तारी और मृत्यु का वृत्तांत (14:3-12)

[3]क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण, यूहन्ना को पकड़कर बांधा, और जेलखाने में डाल दिया था, [4]क्योंकि यूहन्ना ने उससे कहा था इस को रखना तेरे लिए उचित नहीं है। [5]इसलिए वह उसे मार डालना चाहता था, पर लोगों से डरता था, क्योंकि वे उसे भविष्यवक्ता मानते थे।

[6]पर जब हेरोदेस का जन्मदिन आया, तो हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच दिखा कर हेरोदेस को खुश किया। [7]इस पर उस ने शपथ खाकर वचन दिया कि ''जो कुछ तू मांगेगी, मैं मुझे दूंगा।'' [8]वह अपनी माता के उस काने से बोली, ''यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर थाल में यहीं मुझे मंगवा दे।'' [9]राजा दुखी हुआ, पर अपनी शपथ के, और बैठने वालों के कारण आज्ञा दी कि दे दिया जाए। [10]और उस ने जेलखाने में लोगों को भेजकर यूहन्ना का सिर कटवा दिया; [11]और उस का सिर थाल में लाया गया और लड़की

को दिया गया। जिसे वह अपनी मां के पास ले गई। [12]तब यूहन्ना के चेले आए और उसके शव को ले जाकर गाड़ दिया, और जाकर यीशु को समाचार दिया।

यह समझाने के लिए कि हेरोदेस को क्यों लगा कि यीशु मरे हुओं में से जी उठने वाला यूहन्ना ही है, पवित्र शास्त्र का यह भाग कोष्ठक में एक झांकी है। कालक्रम के अनुसार यूहन्ना पहले गिरफ्तार हुआ था (4:12); और कुछ दिनों तक जेल में निष्क्रिय हो जाने के बाद उस ने अपने चेलों को यीशु के पास यह पूछने को भेजा था कि जिसकी उम्मीद की जा रही थी, क्या वह वही है (11:1-6)। हेरोदेस के जन्मदिन की पार्टी में हेरोदियास की बेटी सलोमी की विनती के कारण यूहन्ना को मार डाला गया था (14:3-12)। बाद में इस भयंकर स्मरण से परेशान, हेरोदेस को लगा कि यीशु जी उठा यूहन्ना ही है (14:1, 2)।

ये आयतें मसीह की अन्यायपूर्ण मृत्यु का संकेत भी हो सकता था। डग्लस आर. ए. हेयर को ऐसा ही लगा:

> धर्मशास्त्रीय अर्थ में कहानी यीशु के दुख सहने के पूर्वानुमान के रूप में काम करती है। यूहन्ना की तरह यीशु संसार के राजनैतिक नेताओं की नाराज़गी का शिकार होगा और मार डाला जाएगा। यही बात रूपान्तर के बाद तीन चेलों के साथ यीशु की बातचीत का फोकस बनेगी (17:9-13)।[8]

आयतें 3, 4. मत्ती लिखता है कि **हेरोदेस ने यूहन्ना को पकड़** लिया था। सिपाही उसे **बांध** कर हेरोदेस के पास लाए **और जेलखाने में डाल दिया**। जोसेफस के अनुसार, यूहन्ना को कैद में डालने का स्थान मृत सागर में एक किला मकेरस[9] था (11:2 पर टिप्पणियां देखें)।

यूहन्ना को कैद करने का हेरोदेस का इरादा नबी के उस को विवाह करने पर दोषी ठहराने के कारण था। हेरोदेस का विवाह मूलतया नबतिय्याह के राजा अरितास की बेटी से हुआ था (देखें 2 कुरिन्थियों 11:32)। यह मेल शायद राजनैतिक विवाह था और यह पन्द्रह से अधिक वर्षों तक चला। फिर उसे **अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास** से प्रेम हो गया।

स्पष्टतया हेरोदेस फिलिप्पुस प्रथम[10] फलस्तीन के एक तटीय नगर में प्राइवेट नागरिक के रूप में रहता था। रोम के मार्ग पर, हेरोदेस अन्तिपास फिलिप्पुस और हेरोदियास के साथ रहा था। उस ने हेरोदियास के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा और वह फिलिप्पुस को छोड़कर रोम से उसके लौटने पर उसके साथ आने को सहमत हो गई। उस ने इस शर्त के आधार पर यह समझौता किया कि हेरोदेस अपनी पहली पत्नी को तलाक दे देगा।[11]

घटनाओं की यह शृंखला अपमानजनक और मूसा की व्यवस्था और रोमी कानून के विपरीत थी। रोमी कानून के अनुसार स्त्रियों को तलाक देने या अपने पतियों को छोड़ने की अनुमति नहीं थी (रोमियों 7:2, 3)। यहूदी लोगों में तलाक पुरुष का विशेषाधिकार माना जाता था।[12] परन्तु कुलीन तन्त्र में कुछ यहूदी स्त्रियों ने यह प्रथा अपना ली थी, जो जोर पकड़ गई थी और रोमी समाज में और भी आम हो गई थी। इसके अलावा हेरोदियास के साथ हेरोदेस का सम्बन्ध निकट सम्बन्धियों के साथ शारीरिक सम्बन्ध वाला हो गया था, जिसकी मूसा की व्यवस्था में सख्त मनाही थी। भाई की पत्नी के साथ विवाह की अनुमति मूसा की व्यवस्था में केवल तभी थी

यदि भाई मर गया हो और मरे हुए व्यक्ति का कोई बेटा न हो (लैव्यव्यवस्था 18:16; 20:21; व्यवस्थाविवरण 25:5-10; देखें मत्ती 22:24)। इन कारणों के सम्बन्ध में जोसेफस ने लिखा है कि ''हेरोदियास ने उसे हमारे देश के कानून को डगमगाने और अपने पति के जीते जी उससे तलाक लेने के लिए मजबूर किया, और हेरोदेस [अन्तिपास] के साथ विवाह कर लिया, जो पिता की ओर से उसके पति का भाई था।''[13]

इस व्यभिचारपूर्ण, निकट सम्बन्धियों में विवाह के कारण यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हेरोदेस के मुंह पर उसे डांटा। नबी ने बार-बार उसे बताया, **''इसका रखना तेरे लिए उचित नहीं है।''** हेरोदेस और हेरोदियास के पाप का सामना करने में यूहन्ना की निर्भीकता की तुलना पुराने नियम में अहाब और इज़ेबेल के पाप का सामना करने में एलिय्याह की निर्भीकता से की जा सकती है (1 राजाओं 21:19-24)। प्राचीन जगत में आम लोगों को बोलने की स्वतन्त्रता नहीं होती थी, जितनी आज पश्चिमी समाज में लोगों को है। इस दम्पत्ति के विवाह के लिए यूहन्ना की डांट सबसे पहले तो उसके जेल जाने का और फिर अन्त में उस की मृत्यु का कारण बनी। मत्ती बेशक इन घटनाओं के कई विवरण देता है, पर मरकुस उनमें से एक ही पूर्ण व्याख्या देता है (मरकुस 6:17-29)।

आयत 5. मत्ती ने यूहन्ना को मृत्यु देने की हेरोदेस की इच्छा को प्रकाशमान किया है: **वह उसे मार डालना चाहता था, पर लोगों से डरता था क्योंकि वे उसे भविष्यवक्ता मानते थे।** वह अपने पाप के लिए यूहन्ना की डांट से झिझका और संदेश को खामोश करने के लिए संदेश देने वाले को मरवा डालना चाहता था। परन्तु लोगों में यूहन्ना को नबी माना जाता था (3:5, 6; 11:7-15; 21:26), इस कारण वह अन्यायपूर्ण मृत्यु दण्ड से दंगा नहीं भड़काना चाहता था।

मरकुस में, यूहन्ना को मृत्यु दण्ड देने की हेरोदियास की इच्छा को प्रकाशमान किया गया है। हेरोदेस के साथ अपने विवाह के बारे में जब उस ने यूहन्ना की बात सुनी तो वह अत्यन्त क्रोधित हो गई और उस ने उसे मृत्यु देनी चाही (मरकुस 6:19)। यदि उसे यूहन्ना का और बहुसंख्य लोगों में उस समय उस की प्रसिद्धि का भय न होता तो वह उस की इच्छाओं को तुरन्त पूरा कर देता (मरकुस 6:20)। हेरोदेस ने चाहे आरम्भ में हेरोदियास के साथ दुष्कर्म किया था, परन्तु अन्त में उसी ने उसके साथ चालाकी की थी।

सुसमाचार के इन दोनों विवरणों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है; वे केवल मानवीय सम्बन्धों और इरादों की जटिलता को सामने लाते हैं। स्पष्टतया यूहन्ना के बारे में हेरोदेस के विचार मिले-जुले थे। उस का एक मन तो नबी को खामोश करना चाहता था पर दूसरा उसके प्रचार की ओर जाता था (मरकुस 6:20)। विलियम हैंड्रिक्सन का विचार था कि हरोदेस ने यूहन्ना की प्रशंसा की थी कि परिस्थितियां चाहे जैसी भी हों उस ने बेधड़क सच्चाई बताई थी। यह निडरता बेशक उस चापलूसी के बिल्कुल उलट थी, जो राजा को अपने दरबार में मिलती थी।[14] प्रेरितों के काम में ऐसी ही एक बात मिलती है, जहां हाकिम फेलिक्स ने बीच-बीच में पौलुस से सुनने की इच्छा की, चाहे प्रेरित का संदेश कई बार उसे भयभीत कर देता था (प्रेरितों 24:24-26)।

आयत 6. यूहन्ना को मृत्यु देने के लिए हेरोदियास का अवसर **हेरोदेस के जन्मदिन** पर आ गया था। जन्मदिन यहूदी लोगों के द्वारा नहीं मनाए जाते थे,[15] परन्तु हेरोदेस ने यूनानियों

की परम्पराओं को अच्छी तरह मान लिया था और ऐसे जश्न उनमें आम होते थे।[16] मरकुस के अनुसार, ''हेरोदेस ने अपने जन्मदिन में अपने प्रधानों, सेनापतियों, और गलील के बड़े लोगों के लिए भोज किया'' (मरकुस 6:21)। यदि यूहन्ना का कारावास और मृत्यु मकेरस नामक स्थान में हुई (जैसा कि जोसेफस ने कहा है), तो हेरोदेस के कुछ अतिथि उस घटना में भाग लेने के लिए गलील से पिरिया में चलकर आए थे। मकेरस में हुई खुदाइयों से भोज के कमरे से जुड़ा एक शानदार स्तम्भों की कतार वाला आंगन मिला, जो बड़ी-बड़ी दावतों के स्थान के रूप में काम आता था जो महल के किले में होती थीं।[17]

हेरोदेस की दावत हर प्रकार से मूर्तिपूजकों की दावत थी। शराब खुलेआम थी। छोटे-छोटे कपड़े पहनीं स्त्रियां कामुक नाच के साथ अतिथियों का मनोरंजन करती थीं। विलासिता में, **हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच** दिखाया।[18] शराबियों के सामने कामुक नाच करने वाली लड़की के रूप में शाही परिवार की ओर से किसी का होना अशोभनीय होगा (देखें एस्तेर 1:10-12)। तौभी हेरोदियास अपनी दुष्ट चालों को पूरा करने के लिए अपनी बेटी का शोषण करने से हिचकी नहीं।

बाइबल हेरोदियास की बेटी का नाम नहीं बताती। परन्तु जोसेफस ने उसे ''सलोमी'' बताया है। लड़की का पिता फिलिप्पुस प्रथम था, जिसे हेरोदियास ने तलाक दे दिया था।[19] इस घटना के समय वह लड़की सम्भवतया अपनी आरम्भिक युवावस्था में थी।[20] आयत 11 में उसे ''लड़की'' (*korasion*) के रूप में बताया गया है। यह वही शब्द है जिसका इस्तेमाल याइर की बेटी के लिए किया गया है, जो बारह वर्ष की थी (9:24, 25; मरकुस 5:42)। सलोमी के साथ चाहे उस की मां ने चलाकी की थी, पर उसे भी भोली नहीं माना जाना चाहिए। आखिर उस समाज में वह एक स्त्री के लिए विवाह की उम्र की थी।[21] इस जश्न के कुछ सालों के बाद सलोमी का विवाह अपने चाचा फिलिप्पुस द्वितीय (चौथाई के हाकिम) के साथ हो गया था। 34 ईस्वी में उसके मर जाने के बाद, उस का विवाह अपने चचेरे भाई अरिस्तोबलुस के साथ हो गया था।[22]

आयत 7. सलोमी के प्रदर्शन ने हेरोदेस को इतना भावुक कर दिया कि **उस ने शपथ खाकर वचन दिया जो कुछ तू मांगेगी मैं तुझे दूंगा**। और स्पष्ट कहें तो उस ने उसे ''अपने आधे राज्य तक'' देने का वचन दिया (मरकुस 6:23)। मरकुस में इस अभिव्यक्ति की व्याख्या अक्षरश: न लेकर प्रतीकात्मक अर्थ में किया जाना दो आधारों पर स्पष्ट है। पहले तो हेरोदेस रोम के ठहराए हुए के रूप में गलील और पिरिया पर हाकिम था और वह अपना इलाका किसी दूसरे को नहीं दे सकता था। दूसरा, यह कहना कहावत के रूप में था। किसी समय राजा क्षयर्ष ने यही पेशकश सदियों पहले एस्तेर से की थी (एस्तेर 5:3; 7:2)। इसी प्रकार इस वाक्यांश का अर्थ था कि हेरोदेस सलोमी को एक उपहार देने की पेशकश कर रहा था। आयत 7 में ''शपथ'' शब्द चाहे एक वचन में है, पर आयत 9 में यह बहुवचन में है। अन्य शब्दों में हेरोदेस ने लड़की से यह पेशकश एक से अधिक बार की (मरकुस 6:22, 23)।

आयत 8. यहां पर, सलोमी अपनी मां से बात करने के लिए दावत वाले हॉल से चली गई (मरकुस 6:24)। हो सकता है कि हेरोदियास पास के किसी कमरे में स्त्रियों के साथ खाना खा रही हो। उसके अपनी बेटी को नाच दिखाने के लिए मनाने की बात पर संदेह करना कठिन है। यह मानते हुए कि उस का पति प्रसन्न होगा और जल्दबाजी में कोई वचन दे देगा, उस ने सलोमी

को उसके सामने प्रदर्शन करने के लिए भेजा था। सलोमी ने हेरोदेस का वचन बताते हुए अपनी मां से पूछा कि वह क्या मांगे। वह अपने सौतेले पिता को यह बताने के लिए कि उस ने क्या चुना है, झट से हेरोदियास के पास से चली गई (मरकुस 6:25)।

वह अपनी माता के उकसाने पर बोली, ''यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर थाल में यहीं मुझे मंगवा दे।'' वास्तव में यूहन्ना के सिर की उस की क्रूर विनती मुख्य खाने के रूप में परोसी जानी थी। ''थाली'' (*pinax*) मीट बरताने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाला बड़ा सा चौरस बर्तन होता था। यूनानी शब्द *पिनेक्स* आरम्भ में तख्ते या पटल के रूप के लिए होता था और बाद में लकड़ी के बर्तन के लिए।[23] जॉन लाइटफुट ने हेरोदेस की शपथ और सलोमी की मांग के बीच सम्भावित समानता लिखी है:

> यदि शपथ ''उसके सिर की'' थी, जो आम तौर पर होता था, तो लड़की की मांग बिल्कुल सही थी; चाहे बड़े ही अन्यायपूर्ण ढंग से राजा के वचन का उत्तर दिया गया; जैसे वह कह रही हो, ''तू ने अपने सिर की शपथ खाई है, मैं जो मांगू तू मुझे देगा; तो फिर मुझे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला का सिर दे।''[24]

बदला लेने वाली अपनी मां के साथ सहयोग करते हुए सलोमी ने हेरोदेस के उदार उपहार को पाने के अवसर का लाभ उठा लिया।

आयत 9. हेरोदेस ने जब यह सुना तो वह **दुखी हुआ** कि उस ने ऐसी **शपथ** खाई। यदि बात केवल हेरोदेस की शपथ की होती तो वह सलोमी की मांग ठुकरा सकता था या उसे कुछ और मांगने को कह सकता था। आखिर उस ने एक निर्दोष व्यक्ति की मृत्यु की मांग की थी। यहूदी रब्बियों ने लोगों को शपथों से, जो बड़ी बुराई का कारण न बनें, छुड़ाने के रास्ते निकाल लिए थे। इस शपथ को तोड़ने के लिए बहुतों ने उस की आलोचना नहीं करनी थी, क्योंकि यह किसी निर्दोष व्यक्ति के प्राण लेने का कारण बनना था (देखें 1 शमूएल 25:22, 34)।[25]

तौभी यदि हेरोदेस अपना वचन निभाने में नाकाम रहता तो उस की बात पर आगे से भरोसा नहीं किया जाना था और उस ने उन लोगों का समर्थन खो देना था जिनकी उसे सबसे अधिक आवश्यकता थी। जैसा कि पहले कहा गया है कि **साथ बैठने वालों** में ''अपने प्रधानों, सेनापतियों और गलील के बड़े लोगों'' में से थे (मरकुस 6:21)। यूनानी कृदंत जिसका अनुवाद ''साथ बैठने वाले'' हुआ है, इसे ''[उसके] साथ मेज पर बैठे हुए'' भी किया जा सकता है। यह क्रिया शब्द *sunanakeimai* से लिया गया है।

कई बार इस आयत में हेरोदेस अन्तिपास को **राजा** शब्द के द्वारा नाम देते हुए ध्यान खींचा जाता है। तकनीकी रूप में हेरोदेस ''राजा'' नहीं था। अध्याय में पहले उसे और संक्षेप में ''चौथाई का हाकिम'' बताया गया है (14:1 पर टिप्पणियां देखें)। परन्तु मत्ती का हेरोदेस को ''राजा'' के रूप में बताना प्रसिद्ध उपयोग को दर्शाता है। इस नाम का उस का इस्तेमाल गलती नहीं माना जाना चाहिए।

दिलचस्प बात यह है कि ''राजा'' पद की इच्छा हेरोदेस और हेरोदियास के पतन का कारण बनी। जब अरिस्तबलुस का बेटा और हेरोदियास का सौतेला भाई, अग्रिप्पा प्रथम फिलिप्पुस के चौथाई भाग पर राजा ठहराया गया, तो वह ईर्ष्या और जलन से भर गई। अपने पति को अपने

साथ जाने के लिए मनाकर वह 39 ईस्वी में सम्राट कलीगुला के पास हेरोदेस को भी राजा का पद देने के लिए मनाने की कोशिश करने के लिए गई। परन्तु इस समय अग्रिप्पा ने जो कलीगुला का पुराना मित्र था ने सम्राट को समाचार भेजा कि हेरोदेस ने पारथियों के साथ संघ बना लिया है। कलीगुला ने उस की बात को लेकर उसे निकाल दिया। हेरोदियास ने अपने पति के साथ जाने को चुना। जोसेफस ने इस दम्पत्ति को गाऊल और स्पेन नामक दो अलग-अलग स्थानों पर जाने का उल्लेख किया। विडम्बना यह है कि गलील और पिरिया का हेरोदेस का इलाका उस की सम्पत्ति के साथ, अग्रिप्पा को दे दिया गया था।[26]

आयत 10. हिचकिचाते हुए हेरोदेस ने यह आदेश देते हुए कि उस का सिर थाल में रखकर लाया जाए, **जेलखाने में लोगों को भेजकर यूहन्ना का सिर कटवा दिया** (मरकुस 6:27)। हेरोदेस रोम का ठहराया हुआ था, इस कारण उसे मृत्यु दण्ड देने का अधिकार था। परन्तु बिना पेशी के किसी को मृत्यु दण्ड देना यहूदी व्यवस्था के विरुद्ध था। सिर काटकर मृत्युदण्ड देना भी यहूदी व्यवस्था के विरुद्ध था, क्योंकि इसे मृत्यु के अपमानजनक ढंग के रूप में देखा जाता था।[27]

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु का विवरण जैसे वासना/व्यभिचार, तलाक, शपथें, और क्रोध/हत्या उन कई पापों को दर्शाता है, जिनके विरुद्ध पहाड़ी उपदेश यीशु ने बोला (5:21-37)। यह घटना इतिहास के सबसे अमानवीय कार्यों में से एक है।

आयत 11. जब हेरोदेस की आज्ञा के अनुसार हो गया तो उस ने यूहन्ना का **सिर थाल में** सलोमी को दे दिया। **लड़की** तुरन्त वह घिनौना पुरस्कार **अपनी मां के पास ले गई**। पवित्र शास्त्र हेरोदियास की प्रतिक्रिया नहीं बताता, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि उस ने उस उपहार को आनन्द से स्वीकार किया होगा। अपने शत्रु के सिर पर आनन्द करना यूनानी-रोमी जगत में कोई नई बात नहीं थी।[28]

आयत 12. यूहन्ना के **चेले** (देखें 9:14; 11:2) उस की मृत्यु का पता चलने पर **आए और उसके शव को ले** गए, ताकि वे उसे सही ढंग से दफ़ना सकें। गहरे शोक के साथ उन्होंने उसे विश्राम के लिए कब्र में रख दिया (मरकुस 6:29)। किसी को सम्मानजनक ढंग से दफनाना यहूदियों में परोपकार का महत्वपूर्ण कार्य माना जाता था (यूहन्ना 19:38-42; प्रेरितों 8:2)।

यहां पर अनुवाद हुए शब्द ''शव'' का यूनानी में सामान्य शब्द *sōma* नहीं, बल्कि *ptōma* है। यह शब्द ''जो गिर गया है'' के लिए है। नये नियम में यह विशेषकर ''मृत देह'' का संकेत देता है, विशेषकर जो ''हिंसा में मारा गया'' हो (14:12; 24:28; मरकुस 6:29; 15:45; प्रकाशितवाक्य 11:8, 9)।[29]

यूहन्ना की सिर कटी लाश को दफ़नाने के बाद उसके चेलों ने **जाकर यीशु को समाचार दिया**। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने अनुमान लगाया है कि यूहन्ना के चेले यीशु के पास उस की मृत्यु की खबर देने को नहीं, बल्कि प्रभु को अपनी निष्ठा देने को भी गए होंगे। उन्हें मालूम था कि यीशु एक राज्य खड़ा करेगा और शायद उनका मानना था कि इससे हेरोदेस का शासन उखाड़ दिया जाएगा।[30] यह पुनर्संरचना अगले भाग वाले लोगों की राष्ट्रवादी भावना से मेल खाती है, जिन्हें यीशु ने आश्चर्यकर्म के द्वारा खाना खिलाया (देखें यूहन्ना 6:15)। चेलों का इस प्रकार से यीशु के पास आना यह संकेत दे सकता है कि जो उत्तर उस ने यूहन्ना को भेजा था उससे वह सन्तुष्ट हो गया (11:1-6)। पक्की बात है यूहन्ना ने अपनी मृत्यु के बाद भी यीशु की ओर लोगों

को लाने की अपनी भूमिका निभाई।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

हेरोदेस का विवाह (14:3, 4)

हेरादियास के साथ हेरोदेस का विवाह स्पष्ट रूप में निकट सम्बन्धियों के बीच विवाह का मामला था, जिसकी मनाही व्यवस्था में की गई थी (लैव्यव्यवस्था 18:6–18; 20:21)। यूहन्ना की डांट में निश्चित रूप में यह बात थी, परन्तु इसमें व्यभिचार का आरोप भी था। हेरोदेस ने अपने भाई की पत्नी से विवाह कर लिया। यह व्यभिचार का मामला था, जिसकी पुराने और नये दोनों नियमों में परमेश्वर द्वारा निन्दा की गई है (निर्गमन 20:14; मत्ती 19:1–10)।

निकट सम्बन्धियों में विवाह के एक और मामले में (1 कुरिन्थियों 5:1–13), पौलुस ने कहा कि कुरिन्थुस के आदमी, जिसने अपने पिता की पत्नी कर ली थी ''फोर्निकेशन'' (KJV) या ''लैंगिक अनैतिकता'' (NIV) का दोषी था। ''फोर्निकेशन'' (*porneia*) एक विस्तृत शब्द है, जिसमें व्यभिचार भी आ जाता है।

पौलुस ने रोमियों को बताया कि अपने पति के जीते जी किसी दूसरे पुरुष के साथ विवाह करने वाली स्त्री ''व्यभिचारिणी'' है (रोमियों 7:2, 3)। यह बात अपनी व्याख्या अपने आप करती है। इसकी व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है। यदि कोई पति या पत्नी के जीवित होने के बावजूद दोबारा विवाह करता है, तो वह व्यभिचार का दोषी है। तलाक और पुनर्विवाह के लिए केवल पवित्र शास्त्र का कारण हुए बिना पुनर्विवाह करने वाला व्यभिचारी ही है (19:9)।

सलोमी का नाच और नाचना (14:6)

सलोमी द्वारा दिखाए गए नाच का विवरण चाहे विस्तार में नहीं है पर संदर्भ से संकेत मिलता है कि यह कामुक और कामोत्तेजना भड़काने वाला था। सदियों से अधिकतर कलीसियाओं में नाचने का खुलेआम विरोध होता रहा है। गलातियों 5:19–21 में तीन शब्द नाचने को गलत ठहराते हैं। एक शब्द (*aselgeia*) जिसका अनुवाद ''लुचपन'' हुआ है का अर्थ ''असंयम, कामुकता, लपटता, छिछोरापन, अश्लील हरकतें, पुरुषों और स्त्रियों को निर्लजता से पकड़ना'' है। इन अभिव्यक्तियों में से अन्तिम दो आज अधिकतर होने वाले नाचों को गलत ठहराती हैं जिनमें या तो नाचने वाले साथियों की कामुक हलचल या शरीरों में निकट सम्बन्ध होता है। दूसरा यूनानी शब्द *akatharsia* है जिसका अनुवाद ''गन्दे काम'' यह ''नैतिक भ्रष्टता की स्थिति'' का संकेत देता है गन्दे इरादों से निकले घृणित हैं।[31] तीसरा शब्द ''लीलाक्रीड़ा'' (*kōmos*) का सम्बन्ध ''नाच गाने वाले के साथ, [जो] पतित होकर अन्त में मतवालापन और शराबी हो जाता है।''[32]

नाचने की नैतिकता का निर्णय करने में ये तीन तथ्य काम आते हैं। पहले तो क्या नाच कामुक अनैतिकता को दिखाता या बढ़ावा देता है? दूसरा, क्या नाच करना धृष्ट लिबास पहनने को बढ़ावा देता है? (देखें 1 तीमुथियुस 2:9.) तीसरा, किया जा रहा नाच अनैतिक माहौल में है? (रोमियों 13:12, 13)।

नाच करने में शामिल होने से पहले मसीही व्यक्ति को कई प्रश्नों पर ध्यान से विचार कर लेना आवश्यक है: ''इस प्रकार के नाच करने से मुझ पर क्या प्रभाव पड़ेगा?''; ''इस प्रकार का नाच करने से दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?''; ''इस प्रकार के नाच में भाग लेने से एक मसीही और मसीह की कलीसिया की प्रतिष्ठा के रूप में मेरे नाम पर क्या प्रभाव पड़ेगा?''

टिप्पणियां

[1]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 231-32. [2]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 397. [3]जोसेफस *एन्टिक्विटीज़* 17.11.4; 18.4.6. [4]*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक;* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन 2002), 88 में माइकल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' [5]यूहन्ना से जुड़ा एकमात्र आश्चर्यकर्म उसके जन्म के सम्बन्ध में है (लूका 1)। स्पष्टतया हेरोदेस को यीशु की थोड़ी बहुत जानकारी थी। नहीं तो उसे पता होता कि यीशु यूहन्ना के जीवित रहते समय पहले ही प्रचार कर रहा और आश्चर्यकर्म कर रहा था। [6]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, *द न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 128. [7]जैक पी. लुईस, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* भाग 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 13; देखें जोसेफस *वार्स* 1.30.7. [8]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 165. [9]जोसेफस *एन्टीक्विटीस* 18.5.2. [10]हेरोदेस फिलिप्पुस प्रथम को एक और भाई हेरोदेस फिलिप्पुस द्वितीय (चौथाई का हाकिम) से अलग किया जाना चाहिए। अधिक जानकारी के लिए, *डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 323-24 में देखें हेरल्ड डब्ल्यू. होहनर, ''हेरोडियन डायनेस्टी।''

[11]जोसेफस *एन्टीक्विटीस* 18.5.1. अपनी बेटी के साथ दुर्व्यवहार और अन्य शिकायतों के कारण, राजा अरितास ने बाद में हेरोदेस अन्तिपास की सेनाओं पर हमला कर दिया और उन पर विजय पाई। [12]यीशु ने विवाह के सम्बन्ध में दोनों पक्षों के जीवनभर के समर्पण की परमेश्वर की सृजनात्मक मंशा को बहाल किया (5:31, 32; 19:3-9)। [13]जोसेफस *एन्टीक्विटीस* 18.5.4. [14]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 587. [15]जोसेफस *अगेंस्ट अपियन* 2.26; मिशनाह *अबोदाह ज़राह* 1.3. [16]उदाहरण के लिए देखें जोसेफस *एन्टीक्विटीस* 19.7.1. [17]विलकिन्स, 89-90. [18]परन्तु यह असम्भव नहीं है कि हेरोदियास की बेटी ने भड़काऊ नाच के बजाय हेरोदेस को शालीन नाच से प्रसन्न किया। देखें हेरल्ड डब्ल्यू. होहनर, *हेरड अंटिपास,* सोसायटी फ़ॉर न्यू टैस्टामेंट स्टडीज़ मोनोग्राफ सीरीज़, 17 (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1972), 156-57. [19]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.5.4. [20]सलोमी चाहे बड़ी हो सकती है पर होहनर का तर्क था कि वह बारह से चौदह वर्ष के बीच की होगी। (होहनर, 154-56.)

[21]सप्तति अनुवाद में राजा क्षर्यष के लिए सुन्दर कुंवारी युवतियां के लिए जिसमें एस्तेर भी थी थी *korasion* शब्द का इस्तेमाल किया गया है (एस्तेर 2:2, 9)। [22]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.5.4. [23]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 814; डेविड हिल, द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 244. [24]जॉन लाइटफुट, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट फ्रॉम द टालमुड एंड हेब्रेका: मैथ्यू-1 कोरिथियंस,* अंक 2, *मैथ्यू-मार्क* (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1859; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर, 1979), 218; देखें मिशनाह *सेन्हेड्रिन* 3.2. [25]कीनर, 401. [26]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.7.1, 2; *वार्स* 2.9.6. [27]अधिक जानकारी के लिए, देखें कीनर, 401. [28]देखें स्युटेनियुस लाइव्स ऑफ़ सीज़र्स: गल्बा 20; टेसिटुस *ऐनल्स* 14.57, 59, 64; लाइवी *हिस्ट्री ऑफ़ रोम* 39.43.1-5. [29]बाउर, 895. [30]मैक्गर्वे, 130.

[31]बाउर, 34. [32]सेस्लस स्पिक, *थियोलॉजिकल लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संपा. जेम्स डी. अर्नेस्ट (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1994), 2:354